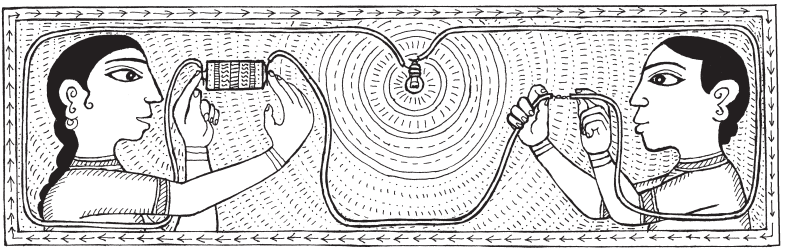

चित्र: कैरन हेडॉक

फ्यूज़ बल्ब का कमाल

कालू राम शर्मा

के.आर. शर्मा उर्फ कालू राम शर्मा लगभग दो दशकों तक होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से कार्य करते रहे। विद्यार्थियों को सीखने का आनन्द मिले, ज्ञान की खोज कक्षा के बाहर भी की जा सके, इसके लिए वे प्रयासरत रहे। अप्रैल, 2021 में कोविड की चपेट में आकर उनका असामयिक निधन हो गया।

वाणी प्रकाशन द्वारा 2019 में प्रकाशित उनकी किताब 'खोजबीन का आनन्द' होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं का लेखा-जोखा है जिसे कहानी या किस्सागोई शैली में लिखा गया है। इसमें से कुछ किस्सों को *संदर्भ* के अगले कुछ अंकों में पढ़ने का आपको मौका मिलेगा।

"फूज़ बलब!" नारंगी की माँ कुछ समझ नहीं पाई। "खराब बल्ब का स्कूल में क्या काम रे, नारंगी!"

माँ को बिना कोई जवाब दिए नारंगी फ्यूज़ बल्ब ढूँढ़ने में लगी रही। माँ यह जाने बिना कि बल्ब और वह भी फ्यूज़ बल्ब का क्या काम हो सकता है, कैसे उसकी मदद कर सकती है। इस बार नारंगी बुदबुदाई, "नारंगी को खबर हो, तभी तो बताए...!" उसने अपने घर में हर कहीं खोजा मगर फ्यूज़ बल्ब नहीं मिला।

नारंगी की छोटी बहन हिना और रघु का छोटा भाई चन्दर गली में माचिस के खाली खोखों की रेल बनाकर खेल रहे थे। नारंगी को अपनी ओर आता देख हिना और चन्दर को शक हुआ कि कहीं नारंगी माचिस के खोखे छीन न ले, इसलिए वे दोनों माचिस के खोखों को छुपाने की कोशिश करने लगे।

"नहीं देंगे," हिना बोली। "नहीं...।" चन्दर ने खाली खोखों को जैसे-तैसे अपनी निक्कर की जेब में भर लिया।

"ऐ चन्दर, फूज़ बल्ब देखा रे...?" दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया। नारंगी महसूस कर रही थी, "मैं भी... इनके पास क्यों गई...। इनको तो अभी खबर ही नहीं होगी कि फूज़ बल्ब होता क्या है।" नारंगी वहाँ से पैर पटकते हुए, निराश हो चल दी।

वहीं दूसरी ओर...

"आखिर बिजली के गोले का स्कूल में क्या काम! स्कूल में तो किताब से पढ़ते हैं। ये क्या लगा रखा है स्कूल वालों ने...?" रघु के पिताजी खटिया पर बैठे पुराना अखबार पढ़ते हुए, नाराज़गी व्यक्त करने का स्वाँग रच रहे थे। दरअसल, वे यह दर्शा रहे थे कि अखबार पढ़ने के साथ-साथ उनका ध्यान रघु पर भी है। रघु ने सोचा कि पिताजी अखबार में घुसे हुए हैं तब तक वह फ्यूज़ बल्ब ढूँढ़ ले तो ही ठीक होगा।

सुबह-सुबह रघु की माँ बकरियों के बाड़े में सफाई करते हुए ढूँढ़ रही थी कि गए साल बल्ब रखे तो थे। रघु की माँ की कोशिश भी नाकामयाब रही।

बकरियों को चरने के लिए बाग में छोड़ने जाते वक्त, रघु की नज़रें दूसरों के घरों के आँगन की ताकों पर और छप्परों पर जमी हुई थीं। रघु सोचता जा रहा था कि कहीं किसी के दरवाज़े पर तोरण के रूप में अगर बिजली के खराब बल्ब लटके मिल जाएँ तो फिर तो बात ही बन जाए। दरअसल, बिजली के खराब हो चुके गोलों में से चपड़ी वगैरह निकालकर, मोटे धागे में पिरोकर लड़ बना ली जाती है। बल्बों में रंगीन पानी भरकर दरवाज़ों पर तोरण के रूप में सजाया जाता है। रघु सोच रहा था कि बल्ब की लड़ मिल जाए तो वह मास्साब की नज़रों में सबसे लाड़ला बन जाएगा। यह सोचते हुए वह हर घर पर नज़रें जमाते हुए बकरियों को घेर रहा था।

रघु की माँ कोठे में से बकरियों की लेंडियों और बची हुई टहनियों को इकट्ठा कर टोकनी में भर चुकी थी। जब कचरे की टोकनी माथे पर ले जाते हुए घूरे की ओर जा रही थी तो उसे अचानक याद आया कि खराब बल्ब एक बार घूरे में पटक आई थी।

घूरे पर पहुँचकर टोकनी को अपने सिर पर से उतारकर एक तरफ रखा और घूरे में टटोलने लगी कि कहीं

बल्ब मिल जाए। और सचमुच रघु की माँ को बल्ब मिल ही गया। उसकी खुशी अपने बेटे को मिलने वाली खुशी से दुगुनी थी और यह खुशी रघु को मिलने वाली खुशी की वजह से ही थी।

डमरू की उलझन

डमरू अपने आप से ही बात कर रहा था, "...क्या करूँ...? क्या अपने घर में होल्डर में लगे चालू बल्ब को चुपचाप निकालकर ले जाऊँ?" उसके मन ने कहा, "ऐसा करना तो ठीक नहीं।" फिर उसने सोचा, आखिर बिजली आती ही कितनी है। बिजली रहती ही नहीं तो होल्डर में बल्ब रहे या न रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता। रात में तो बिजली आती नहीं। तो फिर बल्ब को निकाल भी लें तो फर्क नहीं पड़ने वाला। उसको खयाल-पर-खयाल आते जा रहे थे। उसको फिर एक खयाल आया कि मास्साब ने तो खराब हो चुके बल्ब को स्कूल में लाने का कहा है। आखिरी खयाल उसे आया कि दुकान से तो वही बल्ब लाया था जिसकी उधारी अभी तक नहीं चुकाई गई है। उसने होल्डर के चालू बल्ब को निकालने का विचार त्याग दिया।

डमरू के पिताजी गरजे, "क्या लगा रखा है ये सब? अभी तो तुझे स्कूल में होना था।"

"बल्ब... स्कूल ले जाना है," डमरू बोला।

"ये बल्ब-बल्ब क्या लगा रखा है? क्यों चाहिए? स्कूल में बल्ब का क्या काम? स्कूल तक तो बिजली के खम्भे भी नहीं पहुँचे।"

"नहीं, चालू वाले बल्ब नहीं। खराब वाले चाहिए," डमरू बोला।

डमरू के पिताजी पुरानी खटिया पर से उठकर बैठे तो उनके कन्धों और पीठ की चमड़ी पर खटिया में गुँथी हुई रस्सियों के निशान उभर आए थे। खटिया पर बैठते हुए बोले, "स्कूल में पढ़ाने-लिखाने का काम बन्द कर दिया मास्साब ने?"

"नहीं, बल्ब से पढ़ाएँगे," डमरू बोला।

"चल जा, उधर पीछे बाड़े में रखे हैं। ध्यान से जाना... सँभलकर जाना, ताक में रखे हैं। फूट जाएँगे तो पता नहीं कितनों के हाथ-पैर लहूलुहान होंगे।"

डमरू बाड़े में गया। बाड़े की दीवार से सटाकर जलाऊ लकड़ी जमाकर रखी थी, वहीं ताक में दो बल्ब उसे दिख रहे थे। उनमें से एक पर गहरी धूल जमा हो चुकी थी। एक बल्ब अभी भी साफ ही था। डमरू ने अनुमान लगाया कि ये साफ वाला अभी-अभी फ्यूज़ हुआ होगा। उसने दोनों बल्ब लिए और मन ही मन बुदबुदाया, "काम बन गया।"

डमरू को बल्ब क्या मिल गए मानो कोई कीमती चीज़ मिल गई थी। नारंगी फ्यूज़ बल्ब को अपने दुपट्टे

में बाँधकर स्कूल ले आई थी। उधर इसरार को बड़े बल्ब नहीं मिले तो वह बैटरी के छोटे बल्ब लेकर आया था। डमरू बल्बों को अपने पायजामे की दोनों जेबों में भरकर लाया था। भागचन्द्र दुकान से खरीदकर नया बल्ब लेकर आया था। भागचन्द्र फिल्मी स्टाइल में सोच रहा था कि मास्साब नया बल्ब देखकर खुश होंगे। कुछ और बच्चे तिकोने और रंग-बिरंगे बल्ब लेकर आए थे। हर बच्चा बल्ब लेकर आया ज़रूर था।

पूरी कक्षा के बच्चों ने अलग-अलग तरह के बल्ब मास्साब की टेबल पर लाकर रख दिए। कुछ फ्यूज़ बल्ब मास्साब भी अपने साथ लेकर आए थे।

मास्साब के निर्देश

टेबल पर रखे बल्बों पर नज़र घुमाकर मास्साब बोले, "गुड।" बच्चे मास्साब की ओर टकटकी लगाए हुए थे। वे देख रहे थे कि मास्साब एक-एक बल्ब को उलट-पलटकर ध्यान से देख रहे हैं। जिस भी बच्चे के द्वारा लाया गया बल्ब मास्साब के हाथ में आता, वह बच्चा सजग हो जाता।

फ्यूज़ बल्ब के बहाने मास्साब कोई बड़ी भारी योजना बना रहे लग रहे थे। आखिर इन बल्बों से क्या अनोखा करने वाले हैं, इस पहेली को बच्चे हल नहीं कर पा रहे थे। अचानक मास्साब बोले, "ये क्या? किसने कहा था कि चालू बल्ब लेकर आना? भई, ऐसा तो मत करो। जब फालतू चीज़ से बढ़िया काम हो जाए तो फिर बढ़िया चीज़ को फालतू बनाकर, उसका इस्तेमाल क्यों करें? इसको जो भी लाया है, वह अपने घर वापस ले जाए। और ये रंग-बिरंगे और नुकीले बल्बों की ज़रूरत नहीं।"

भागचन्द्र को अब एहसास हो गया था कि आखिर नया बल्ब लाने के बावजूद मास्साब क्यों खुश नहीं हुए।

मास्साब ने निर्देश दिया कि सभी बच्चे टोलियों में बैठ जाएँ। वैसी ही टोली बनानी है जैसे कल बनवाई थी। कक्षा में चहल-पहल दिखाई दे रही थी। कक्षा में कलरव हुए जा रहा था फिर भी मास्साब शान्त भाव से यह सब कुछ देख रहे थे।

"अरे, भई अब दम भी ले लो। अगर टोलियाँ बनाने में ही पीरियड खत्म हो जाएगा तो पढ़ाई कब करेंगे। देखो, जल्दी-से बैठ जाओ अपनी-अपनी टोली में।" टोलियों में बैठे बच्चे मास्साब के निर्देशों को सुनने को बेताब थे। "सबसे पहले हम इन फ्यूज़ बल्बों से एक 'मज़ेदार खेल' करेंगे। टोलियों में सभी के पास एक-एक बल्ब होगा।"

मास्साब हाथों को सीने से बाँधकर कक्षा में घूमते हुए कह रहे थे, "हाँ, हमें कुछ छोटे पत्थरों और बड़ी कील की ज़रूरत होगी। बड़ी वाली कीलें किट की अलमारी में रखी हुई हैं। तो ऐसा करते हैं कि पहले बाहर से हरेक टोली एक-एक पत्थर ले आए।"

हालाँकि, बच्चों को मास्साब की किट वाली बात समझ में नहीं आई थी। दरअसल, बात यह थी कि बच्चे मास्साब से पूछने में संकोच महसूस कर रहे थे। वैसे सच कहा जाए तो बच्चों में पूछने की आदत अभी बनी नहीं थी। इसलिए 'किट' को लेकर उन्होंने न तो कुछ सोचा और न ही पूछा।

मास्साब ने बाहर से पत्थर लाने को जब कहा तो कक्षा के दरवाज़े में ठस्सम-ठस मच गई। मास्साब को कहना पड़ा, "धीरे, भाई लोगो। कोई जल्दी नहीं है। आराम-से काम करो।"

शिक्षक सोच रहे थे कि बच्चों में यह गुण विकसित करना होगा कि टोली का मतलब यह है कि टोली के सदस्य एक वक्त में अलग-अलग काम करें। मसलन, बाहर से पत्थर लेने के लिए पूरी टोली को जाने की ज़रूरत नहीं। एक सदस्य यह काम कर सकता है। यह बात उनके मन में थी जिसे वे आने वाले वक्त में बच्चों को बताकर, उस पर अमल करने का सोच रहे थे।

सभी टोली वाले बाहर गए और एक-एक पत्थर लेकर आ गए। मास्साब ने टोलियों को एक-एक बड़ी कील दे दी। एक टोली को स्क्रू-ड्राइवर देते हुए बोले, "इससे काम चलाओ।"

मास्साब ब्लैकबोर्ड के बगल में एक फ्यूज़ बल्ब लेकर खड़े हो बोले, "हाँ तो मैं कह रहा था कि बल्ब से हमको रोशनी मिलती है। जब खराब हो जाए तो फेंकने का नहीं। इससे एक मज़ेदार काम किया जा सकता है। हम फ्यूज़ बल्ब की मदद से छोटी चीज़ों को बड़ा करके देखेंगे। तो चलो, एक मज़ेदार खिलौना बनाते हैं इससे।"

साथ-साथ शुरुआत

मास्साब अब टोलियों के बीच आकर ज़मीन पर बैठ गए। जब मास्साब ज़मीन पर बैठे तो बच्चों को इस बात का भारी अचरज हुआ कि मास्साब भी हमारे बीच बैठ सकते हैं। दरअसल ये बच्चे पाँचवीं पास कर चुके थे मगर उन्होंने कभी भी मास्साब और बहनजी को कक्षा में उनके साथ नीचे बैठे नहीं देखा था। उनके दिमाग में मास्साब की छवि कुर्सी पर विराजमान थी।

फर्श पर शिक्षक के साथ बैठे बच्चे असमंजस में थे कि अब कक्षा में क्या होने वाला है। मास्साब बता रहे थे कि बल्ब के साथ अब क्या करना है। मास्साब ने बल्ब को ज़मीन पर रखा और उसकी काली चपड़ी को एक पत्थर से धीरे-धीरे ठोककर निकालने लगे। बल्ब के नीचे मास्साब ने कॉपी रख ली थी जिससे कि बल्ब फूटे नहीं। जब काली चपड़ी की पकड़ ढीली पड़ गई तो उसमें बड़ी-सी कील धीरे-से घुमाकर फँसाते हुए अन्दर की काँच की नली को तोड़ दिया। बल्ब के अन्दर की काँच की

नली फूटी तो 'खचाक' की आवाज़ आई। काँच की नली के टुकड़े-टुकड़े होकर बल्ब के अन्दर बिखर गए थे। बल्ब को धीरे-से हिलाकर टूटी नली के काँच के टुकड़े और तार के टुकड़ों को धीरे-धीरे एक कागज़ पर झाड़ लिया गया। काँच के टुकड़े, चपड़ी और तार के टुकड़े जो बल्ब में से निकले, उनको कचरे के डिब्बे में डाल दिया।

अब मास्साब के हाथ में बल्ब का खोखला गोला था और उससे चिपकी हुई एल्यूमिनियम की टोपी।

मास्साब के चेहरे पर छाई हुई खुशी बल्ब की चपड़ी और काँच की नली को सफलतापूर्वक निकालने की थी। वे आगे कुछ कहें, इसके पहले ही सभी बच्चे अपनी-अपनी टोलियों में बल्ब को ज़मीन पर टिकाकर चपड़ी को ढीली करने में जुट गए।

मास्साब कक्षा में बहुत कम बोल रहे थे। सभी बच्चे टोलियों में बल्ब की चपड़ी को निकालने में व्यस्त थे। मास्साब कक्षा में बाल वैज्ञानिकों को देख खुश हो रहे थे। कक्षा में ठक-ठक के बीच बच्चों का हल्का-फुल्का शोर पूरे स्कूल में गूँज रहा था। स्कूल के प्रधानाध्यापक बार-बार कक्षा की दहलीज़ तक आते व देखकर वापस चले जाते। मास्साब को एहसास हो रहा था कि प्रधानाध्यापक को शोर पसन्द नहीं है। आखिर प्रधानाध्यापक जब चौथी बार उनकी कक्षा की ओर आए तो मास्साब ने सफाई दी, "असल में क्या है कि कोई सृजनात्मक काम हो तो थोड़ा-बहुत शोर तो होता ही है।"

साथ ही, मास्साब ने उन्हें इस गतिविधि के बारे में बताया। अबकी बार वे कक्षा में चल रहे कार्य को ध्यान से देख रहे थे। उधर बच्चे बड़ी तल्लीनता के साथ बल्ब की चपड़ी और काँच की नली को पत्थर और

चित्र: रंजीत बालमुचु

कील जैसे मामूली औज़ारों की मदद से निकालने में लगे हुए थे।

थोड़ी टूट-फूट

छह में से चार टोलियों ने फ्यूज़ बल्ब के अन्दर की काँच की नली और तार वगैरह को निकाल लिया था। एक टोली का बल्ब फूट चुका था इसलिए इस टोली के बच्चे घबरा गए थे। उनके चेहरे पर डर था कि मास्साब डाँटेंगे।

मास्साब ने जब यह देखा तो वे खयालों-ही-खयालों में गर्मियों की छुट्टियों के दौरान आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण में पहुँच गए जहाँ शिक्षकों की टोलियों में भी बल्ब फूट गए थे। तब उनकी कक्षा के प्रशिक्षणकर्ता विशेषज्ञों की टोली ने उन्हें कोई जली-कटी बात नहीं कही थी। प्रशिक्षण में भी तो उस शिक्षक टोली को फिर से फ्यूज़ बल्ब दिया गया था।

मास्साब ने बच्चों के साथ वैसा ही किया जैसा उनके साथ प्रशिक्षण में हुआ था। उस टोली को फिर से फ्यूज़ बल्ब दिया और कहा, "अब ध्यान से...। कहीं हाथ में काँच वगैरह घुस न जाए।"

इतना कहकर फिर से मास्साब बरामदे में प्रधानाध्यापक से बातें करने लग गए। मास्साब प्रधानाध्यापक को बता रहे थे, "इस तरह से बच्चों को पढ़ाने में एक पीरियड कम ही पड़ता है। एक पीरियड में प्रयोग और उन पर चर्चा नहीं हो पाती। इसलिए ज़रूरी है कि जब बच्चों को खुद करके देखना हो तो दो पीरियड एक साथ दे दिए जाएँ।"

प्रधानाध्यापक सिर तो हिला रहे थे मगर यह समझ नहीं आ रहा था कि वे 'हाँ' कर रहे हैं या 'न'। आज के दिन तो मास्साब ने दो पीरियड इस काम में ले ही लिए थे।

एक उपयोग यह भी

सभी टोलियों के पास एक-एक बल्ब था जिसमें से अन्दर काँच की नली और फिलामेंट वगैरह निकाले जा चुके थे। हर कोई बल्ब को अन्दर और बाहर से देखे जा रहा था।

मास्साब कुछ कहें, इसके पहले ही इसरार ने बल्ब में पानी भर लिया और वह पानी भरे बल्ब में से देखने लगा। इसरार ने देखा कि इसमें से तो चीज़ बड़ी दिखती है और यह नज़ारा

चित्र: रंजीत बालमुचु

चित्र: हीरा धुर्वे

देख उछल पड़ा। इसरार की देखा-देखी सभी टोलियों ने भी ऐसा ही किया।

कक्षा के दरवाज़े पर खड़े होकर मास्साब मुस्करा रहे थे। उनके बिना कुछ कहे ही वह काम हो रहा था जो वे चाहते थे।

"इसमें से तो चीज़ बड़ी दिखती है," नारंगी बोली।

"तो समझ में आ गया कि ये फ्यूज़ बल्ब कितने काम की चीज़ है?" मास्साब बोले, "ये तो अभी शुरुआत है। अब देखो कि इससे कोई चीज़ कितनी बड़ी दिखती है।"

"अच्छा ऐसा करते हैं कि हरेक टोली कुछ छोटी-छोटी चीज़ों को सफेद कागज़ पर रखे और बल्ब में पानी भरकर देखे," मास्साब ने निर्देश दिया। टोलियों को मास्साब ने यह भी बताया कि बल्ब में से कैसे देखें। मास्साब ने बल्ब को तिरछा किया और उसमें से दूसरे हाथ की हथेली की लकीरों को देखा। फिर बच्चों को खुद बल्ब में से देखने को कहा। मास्साब ने यह भी बताया कि बल्ब को पानी से पूरा नहीं भरना है।

"अगर पूरा पानी से भरें तो?" भागचन्द्र ने पूछा।

"तो...," मास्साब ने सोचकर कहा, "तो खुद करके देख लो।"

'तुम खुद करके देख लो', यह बच्चों की विवेकशीलता को बढ़ावा देना ही तो है। मास्साब ने यह कहकर 'खुद करके देखने' का रास्ता खोल दिया था।

चींटी का अवलोकन

कक्षा की दीवारों और फर्श पर चींटियाँ खूब दिख रही थीं। बच्चे पानी भरे फ्यूज़ बल्ब में से चींटी को देखना चाह रहे थे मगर हर बार चींटी खिसक जाती। एक टोली को लगा कि वह चींटी को बिना मारे ही देखे। चींटी की चाल के हिसाब से बल्ब को आगे-पीछे खिसकाते हुए देखने लगे। जब चींटी की टाँगों को देखने की कोशिश की जाती तो चींटी या तो अपनी टाँगों को अन्दर खींच लेती या फिर तेज़ी-से चलने लगती। बच्चों ने चींटी की चाल को पहली बार इतना ध्यान से देखा था।

चींटी के अवलोकन के चक्कर में नारंगी अपनी ही जगह पर गोल-गोल घूमती जा रही थी। नारंगी के सामने जो कॉपी और बस्ता रखा हुआ था, वह अब उसके पीछे चला गया था। नारंगी ने तय किया कि वह चींटी को बल्ब में से देखकर ही दम लेगी। वह तो उसके आगे-पीछे सरकने पर ही अटकी हुई थी। कभी चींटी आगे को जाती तो कभी पीछे।

मास्साब ने बच्चों से कहा, "अच्छा, मुझे तुम चींटी की टाँगें गिनकर बताओ।"

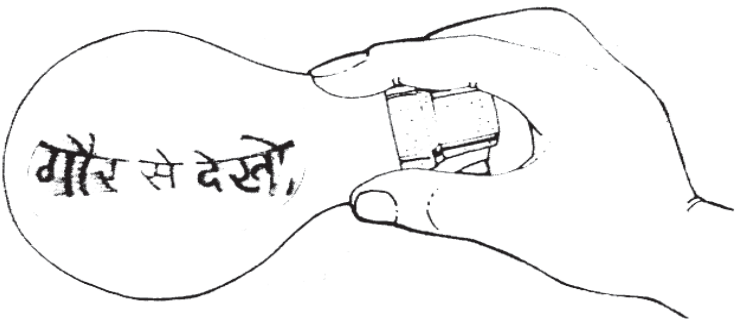

चित्र: रंजीत बालमुचु

चित्र: हीरा धुर्वे

विष्णु ने मास्साब की बात को सुना और वह चींटी की टाँगें गिनने की कोशिश करने लगा। दरअसल, चींटियाँ तो बच्चों ने कई बार देखी थीं मगर उन्हें देखने में इतना ध्यान कभी नहीं लगाया। न ही चींटियों की टाँगों की गिनती करने के बारे में सोचा था। चींटियों के अध्ययन का यह पहला मौका था। इस दौरान कक्षा में शोर अचानक थम चुका था।

केशव ने चींटी में बहुत कुछ देखा जो पहले कभी नहीं देखा था। उसे चींटी की मूँछें गज़ब की लगीं। चींटी के सिर को तो वह आसानी-से पहचान पाया। वह पिछले हिस्से में चींटी की पूँछ ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। पूँछ जैसा तो उसे कुछ दिखा नहीं, हाँ, पीछे का हिस्सा कुछ नुकीला ज़रूर दिखा। वह मन ही मन बुदबुदाया, "पूँछ तो नहीं होती चींटी की!"

मास्साब बच्चों के बीच में घूम-

घूमकर देख रहे थे। "क्या देखा चींटी में? कुछ दिखा?"

"मास्साब ये खिसकती है।" नारंगी ने ज़मीन पर झुककर ऐसे बताया जैसे कि वह खुद एक चींटी हो।

मास्साब जानते थे कि चींटी की टाँगों को गिनने के पहले चींटी की चाल और हरकतों को देखना मज़ेदार होगा। हालाँकि, मास्साब ने चींटियों की टाँगों की संख्या की जानकारी बच्चों के सामने उगलने की बजाय निगलना ही बेहतर समझा। उन्होंने फिर से सवाल किया, "बताओ, चींटी की कितनी टाँगें हैं?"

मास्साब ने इस बीच एक और बात कही कि बल्ब में से चींटी जैसी दिखती है, वैसा-का-वैसा ही चित्र अपनी कॉपी में बनाना है। बच्चों ने चींटी का चित्र अपनी कॉपी में बनाना प्रारम्भ किया। बच्चों ने जो चित्र बनाए, वे उतने ही छोटे थे जितनी चींटी होती है। हाँ, मगर हर टोली के बच्चों ने चींटी का चित्र बनाया ज़रूर था। मास्साब ने बच्चों के चित्रों को देखा और बस इतना ही कहा, "बढ़िया चित्र बनाए हैं।" बच्चे सोच रहे थे कि किसी के भी चित्र को गलत नहीं कहा। बच्चों के बनाए चित्र को मास्साब ध्यान से देख रहे थे।

कुछ बच्चों ने कतार में चल रही चींटियों का एक चित्र बनाया था। बच्चे अब चित्रों के बारे में स्वयं ही बता रहे थे, "ये इसकी मूँछें हैं। चींटी इनको हिलाती रहती है।"

खोजबीन का मज़ा

बच्चों को कक्षा में काफी मज़ा आ रहा था। कुछ बच्चे एक-दूसरे के कपड़ों और बालों को पानी भरे बल्ब के लेंस से देख रहे थे। जब मास्साब कक्षा से बाहर होते तो वे आपस में शरारत भी कर लेते। कक्षा में कहीं-कहीं पानी भी गिर चुका था। यह सब कुछ तो होना लाज़िमी ही था।

कुछ टोली के बच्चे कक्षा से बाहर, बरामदे और मैदान में पहुँच चुके थे। इसरार की टोली स्कूल के कैम्पस में पीपल के पेड़ की छाल में छिपे हुए कीड़ों का अवलोकन कर रही थी।

"अब तुम सभी टोलियों को एक-एक बिल्लोरी काँच दूँगा। खुद ही देखो कि इसकी मदद से तुम कैसे चीज़ों को बारीकी-से देख सकते हो।" मास्साब ने कक्षा में रखी अलमारी में से सभी टोलियों को एक-एक बिल्लोरी काँच निकालकर देते हुए कहा।

टोलियों को जैसे ही बिल्लोरी काँच मिला कि वे एक बार फिर टूट पड़े चीज़ों के अवलोकन में। कक्षा के बाहर कहीं से कागज़ के जलने की गन्ध-सी आने लगी। तभी कुछ बच्चों सहित मास्साब ने देखा कि रघु की टोली बिल्लोरी काँच से कागज़ में आग लगा चुकी है।

बाकी बच्चों को लगा कि अब तो रघु की टोली की खैर नहीं, मगर मास्साब तो हँस रहे थे। "तो आखिर

तुमने बिल्लोरी काँच से आग पैदा कर ही ली।"

मास्साब ने सबको इशारा करके कक्षा में आने को कहा। बच्चों में खलबली मची हुई थी। हर किसी के हाथ में बल्ब और बिल्लोरी काँच था। मास्साब के लिए बच्चों को शान्त कराना मुश्किल हो रहा था।

मास्साब के मुँह से निकला, "शीऽऽऽ!" कुछ टोलियाँ अभी भी बारीक-से-बारीक चीज़ को देखने में मशगूल थीं।

सभी ने बल्ब जैसी मामूली-सी चीज़ से जिन-जिन चीज़ों को देखा था, उनके चित्र भी बनाए थे।

मास्साब ने कहा, "अब यहाँ बोर्ड पर सभी चित्र बनाएँगे जो तुमने देखा है।"

सबसे पहले नारंगी आई। उसने चींटी का चित्र बनाया। इसरार ने शक्कर के दाने का चित्र बनाया। रघु ने नाखून का चित्र बनाया जिसमें मैल फँसा हुआ था। और भागचन्द्र ने कुत्ते की चमड़ी में चिपकी हुई बघई का चित्र बनाया।

सवाल से जवाब की खोज

मास्साब ने बोर्ड पर बने चित्रों को एक बार फिर से ध्यान से देखा और शाबाशी देते हुए कहा, "हमारी खोजबीन का यह पहला दिन है। तुमने फ्यूज़ बल्ब खोजा, इससे एक उपकरण बनाया और तमाम चीज़ों का अवलोकन किया। हमारी यह कहानी इसी तरह से आगे बढ़ेगी। आगे तुम सबको और भी बहुत कुछ करने का मौका मिलेगा। अपने आसपास की तमाम चीज़ों को बारीकी-से देखना। जब हम किसी चीज़ को बारीकी-से देखते हैं तो कई सारे विचार पैदा होते हैं। और जब विचार पैदा होते हैं तो फिर कई सारे सवाल उठते हैं। इस तरह से हम उनके जवाब खोजने की कोशिश करते हैं। ...जब जवाब खोजने निकलते हैं तो और नए सवाल उठते हैं...।"

कक्षा से बच्चे उठना नहीं चाह रहे थे। दो पीरियड के कलरव के बाद कक्षा में कुछ पल को एकदम शान्ति छा चुकी थी।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

चिन्हित चित्र: हीरा धुर्वे: भोपाल की गंगा नगर बस्ती में रहते हैं। चित्रकला में गहरी रुचि। साथ ही, 'अदर थिएटर' रंगमंच समूह से जुड़े हुए हैं। फिलहाल, *एकलव्य* में डिज़ाइन टीम के साथ इंटर्नशिप कर रहे हैं।

एक और बात उल्लेखनीय है कि कालू राम शर्मा ने इस किताब के लिए मिली रॉयल्टी *एकलव्य* को भेंट कर दी थी।